Shodhaamrit, Vol.-1; Issue-2 (July-December) 2024 : Page No.-41-44

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

Online ISSN-3048-9296
Vol.-1; issue-2 (July-Dec.) 2024
Page No- 41-44

©2024 Shodhaamrit (Online)
www.shodhaamrit.gyanvividha.com

डॉ. चन्दीर पासवान
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, एम. एल. एस. कालेज, सरिसब- पाही, मधुबनी (बिहार)

Corresponding Author :
डॉ. चन्दीर पासवान
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, एम. एल. एस. कालेज, सरिसब- पाही, मधुबनी (बिहार)

गोदान में स्त्री- प्रतिरोध के स्वर

भारतीय इतिहास में जहां नारियों को राजा- महाराजा ने उपभोग की वस्तु बनाकर रखा था। वहीं एक राजा दूसरे राजा की रानी और राजकुमारी को अपहरण कर ले जाने में अपने को महान समझता था। नारियों को हमेशा परदे के अंदर ही रखा जाता था। राजमहलों में रानियो और दासियों के साथ जो भी बीत जाए वह अपने स्वाभिमान की रक्षा नहीं कर पाती थी और नहीं आवाज उठा पाती थी। अगर आवाज उठाती भी थी तो उसकी बातों को दबा दिया जाता था। इसका उदाहरण महाभारत के द्रोपदी चीर हरण है। एक द्रौपदी की पांच -पांच एक से बढ़कर एक पति होते हुए भी उसकी स्वाभिमान की रक्षा ना हो सका। राजदरबार में शूरवीर और ज्ञानी गुणी योद्धाओं के रहते हुए भी उसकी चिख दीवार से टकरा टकराकर वापस हो गया इसी बातों को गौर किया जाए तो हम देखते हैं कि प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य के इतिहास में एक बहुत बड़ा क्रांतिकारी कदम उठाया उसी का परिणाम है 'गोदान'।

'गोदान' में नारियों की भूमिका एक शक्ति के रूप में प्रकट हुई है।जिसे हम लोग नारी शक्ति कहते हैं जिस समय समाज में नारी के मुंह में ताला लगा हुआ था प्रेमचंद ने धनिया जैसी पत्र से ताला खुलवाने का क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। तभी तो धनिया कहती है। "हमने जमींदार के खेत जोत हैं तो वह अपना लगान ही तो लेगा उसकी खुशामद क्यों करें उसके तलवे क्यों सहलाएं"[1]

वास्तविक सत्य भी है कि जमींदार अनेकों प्रकार के बेगार तो ले लेते हैं साथ ही किसी प्रकार का मरौवात नहीं करते जैसे नजर-नजराना, घुस-घास वसूला ही जाता है। यहां धनिया के माध्यम से प्रेमचंद किसान और मजदूरों का विद्रोह प्रकट किया है।

होरी भोला की गाय को अपने घर जैसे- तैसे भी हो ले आता है। हीरा उसका छोटा भाई ईर्ष्यावश गाय को जहर दे देता है। गाय मर जाती है।

दरोगा तहकीकात करने आता है। इस समाज में लोगों की अपनी-अपनी नजरिया है। वैसे होरी सबके लिए नरम चार है, इस कारण समाज के कुछ चालबाज लोग अपने-अपने तरीके से लाभ लेने के लिए षड्यंत्र रचकर कर्ज के जाल में होली को फंसाना चाहता है। बात सही है की दरोगा जी आए हैं तहकीकात करने में घूस लेना चाहते हैं। किंतु वे भी सच्चाई को भी जान लेना चाहते हैं। कि होरी घुस कितना देने में सक्षम है। नहीं की स्थिति में भी दरोगा मानने लगते हैं, किंतु तथा कथित समाज का कर्ताधर्ता किस्म के लोग समाज में बड़प्पन और महानता का चोला ओढ़ा है। दातादीन, झिंगुड़ी सिंह, नोखेराम, उसके चारों प्यादे, मंगरु साहू और लाला पाटेश्वरी लाल पहुंचे और दरोगा के सामने हाथ बांधकर खड़े हो गए। होरी की तलबी हुई। जीवन में पहला अवसर था कि वह दारोगा के सामने आया होरी मानो ऐसे डर गया था जैसे फांसी हो जाएगी। जहां धनिया को मारते हुए होरी का एक-एक अंग फड़कता था। वहीं दूसरी ओर दारोगा जी के सामने उसका सारा अंग प्रत्यंग कछुआ के जैसे कपाट में सिमट गया था। दारोगा जी होरी को आलोचक दृष्टि से देखकर उसका नस-नस पहचान गया। होरी का चेहरा देखते ही पता चल गया था कि इसे केवल एक ही घुड़की काफी है।

दारोगा ने पूछा "तुझे किस पर सुबहा है"?[2] होरी ने जमीन छुए और हाथ बांधकर बोला "मेरा सुबहा किसी पर नहीं है सरकार! गाय अपनी मौत मेरी है बूढी हो गई थी।"[3] धनिया भी पीछे खड़ी थी आगे बढ़कर बोली। "गाय मरी है तुम्हारे भाई हीरा ने सरकार ऐसे नहीं है जो तुम कह दो वह मान ले की जांच करने आए हैं।"[4] धनिया की बात सुनकर दरोगा जी जानना चाहा कि औरत कौन है? दरोगा से बतियाने के तक में कई लोग एक साथ बोला "होरी के घरवाली है सरकार!"[5]

पाटेश्वरी लाल बोला जब-जब दारोगा जी आए हैं, बिना लिए गए हैं कब? झिंगुड़ी सिंह ने होरी को बुलाकर कहा निकालो जो कुछ देना हो यूं गल ना छूटेगा। दातादीन ने कहा रुपए की कोई जुगाड़ करो। पाटेश्वरी लाल ने जब दरोगा जी से होरी का पैरवी किया तो। दरोगा जी मान भी गए। दरोगा ने सोचा "तो फिर उसे सताने से क्या फायदा? मैं ऐसे को नहीं सत्ता जो आप ही मार रहे हो।"[6] वही पाटेश्वरी लाल दरोगा से कहता है "नहीं हुजूर ऐसा न कीजिए फिर हम कहां जाएंगे हमारे पास दूसरी और कौन सी खेती है?"[7] इन चालबाजों ने होरी को षड्यंत्र में फंसाकर झींगुरी सिंह ने होरी को तीस रुपए कर्ज गिन कर दिया। और झींगुरी सिंह ने एहसानों के बोझ तले दबाते हुए बोले आज ही कागज लिख लेना तुम्हारे भलमनसि पर दे दिया हूं। यह आग्रह पूर्ण दबाव है उसकी भलमनसी की भी दुहाई दिया। होरी भी रुपया लेकर अंगोछे में बांधे प्रसन्न दरोगा जी को देने के लिए आगे बढ़ा। धनिया झटककर आगे आई और अंगोछी एक झटके के साथ उसके हाथ से छीन ली, गांठ पक्की ना होने के कारण झटका पाते ही गांठ खुल गई और सारे रुपया जमीन पर बिखर गए। धनिया नागिन की तरह पुकार कर बोली। "ये रुपया कहां लिए जा रहा है? बता! भला चाहता है, तो सब रुपए लौटा दे..... दारोगा तलाशी ही तो लगा। ले लें जहां चाहे तलाशी। एक तो सौ रुपए की गाय गई ऊपर से यह पालेथन! वा! री तेरी इज्जत!"[8]

धनिया दूरदर्शी होने के कारण चालबाजों की चालाकी को समझ गई हैं कि यह लोग झूठ-मुठ के उनको कर्ज के बोझ में दबाना चाहता है।दरोगा को भी ऐसा जवाब देती है कि उसकी की भी अकल ठिकाने आ जाती है। गांव के कर्ताधर्ता पाटेश्वरीलाल, झिंगुड़ीसिंह, दातादीन के मुंह पर कालिक पुत गई। दरोगा का मानो दांत खट्टे हो गए। समाज में धनिया की तेजस्विता को बढ़ा चढ़ा कर बखान किया जाने लगा। इलाके भर के लोग उसकी दर्शन करने आने लगे। धनिया ने अपने साहस से महिलाओं का ही नहीं पुरुषों का भी नेतृत्व प्राप्त कर लिया था। लोग आसपास में चर्चा करते हैं। भवानी ईस्ट है उसे दरोगा ज्यों ही उसके आदमी को गिरफ्तारी के लिए कड़ी डाली की धनिया ने भवानी का सुमिरन किया भवानी उसके सिर आ गई पति के हाथ की हथकड़ी तोड़ डाली और दरोगा की मुंछे पकड़ कर उखाड़ ली फिर उसके छाती पर चढ़ बैठी । इस प्रकार धनिया अपने

साहस की छाप जन मानस पर छोड़ती है कि लगता है प्रेमचंद ने युगों युगों से मानमर्दित हो रही नारियों के स्वाभिमान को शुद समेत लौटा रहे हैं। धनिया पूरे स्वाभिमान भरे शब्दों में बोलती है "जिसके रुपए हो ले जाकर उसे दे दो हमें किसी का उधर नहीं लेना है।"[9] यह हत्यारे गांव के मुखिया हैं गरीबों का खून चूसने वाला। "शुद-ब्याज डेढ़ी-सवाई, नजर-नजराना, घुस-घास जैसे भी हो गरीबों को लूटो उस पर सूराज चाहिए। जेल जाने से सूराज ना मिलेगा सूराज मिलेगा धर्म से न्याय से।"[10]

जिस समाज में नारियां पति की प्रताड़ना और मारपीट खाकर भी मुख दर्शक बनी रहती है इस समाज में धनिया ईंट का जवाब पत्थर से देती हुई शेरनी तरह गर्जना करती हुई बोलती है। "तू हट जा गोबर देखूं तो क्या करता है मेरा दरोगा जी बैठे हैं इसकी हिम्मत देखो घर में तलाशी होने से इसकी इज्जत जाती है और अपनी मेहरिया को सारे गांव के सामने रतिया में से इसकी इज्जत नहीं जाती है यही तो वीरों का धर्म है बाद भीड़ है तो किसी मर्द से जाकर लड़....।"[11] आज से अपना घर संभाल देख इसी गांव में तेरी छाती पर मूंग दलकर रहती हूं कि नहीं और अच्छा से खाऊं पहनूंगी। अच्छा ! से देख लो।" होरी परास्त हो गया जिसका अंग-अंग धनिया को मारते समय फरक रहा था वह परास्त होकर बथुआ के समान जैसे कुम्भला गया। धनिया के ही जैसे संघर्ष करने वाली झुनिया भी है भोला अहीर की बेटी। झुनिया ग्वालीन होने के कारण घर-घर दूध पहुंचती है इसी क्रम में एक ब्राह्मण झुनिया के रुप सौंदर्य पर आसक्त हो जाता है। एक दिन उसकी पत्नी कहीं बाहर गई रहती है। सब दिन की तरह दुनिया उस दिन भी दूध पहुंचाने जाती है लोलुप ब्राह्मण मौका पाकर उसकी अस्मिता के साथ खिलवाड़ करना चाहता है। झुनिया डर त्याग कर सूझबूझ का सहारा लेकर उसके मुंह पर ही हांडी दे मारती है सारा शरीर दूध से ही नहा जाता है तिलक घुल जाती है और वह बेचारा बने माथ पकड़ कर बैठ जाता है। यहां यह दिखाया गया है कि इतिहास की स्त्रियां जो पुरुष के हाथों के कठपुतली बने रहते थी उसके विपरीत प्रेमचंद की स्त्रियां परिस्थितियों का प्रतिकार का अपनी अस्मिता की रक्षा स्वयं करने में सक्षम रहती है। वह उस लोलुप को कहती है "इस फिर मेरा ना रहना पंडित जी! मैं अहीर की लड़की हूं मूंछ का एक-एक बाल चुरा लूंगी।"[12]

झुनिया अपने प्रेमी गोबर को बीता हुआ जीवन का अनुभव प्रेम प्रसंग में सुना रही है। "दूसरे दिन में फिर उसके घर गई उसके घर वाली आ गई थी.... मैंने कहा कल की तुम्हारी करतूत खोल दूं..... मैंने कहा... अच्छा ! तो थुक रखकर चाटो तो छोड़ दूं..... कहने लगा पंडितानी मुझे जीता ना छोड़ेगी।" मुझे भी उसे पर दया आ गई।"[13] इस प्रसंग में प्रेमचंद धार्मिकता और धर्म के आड़ में चोला पहना हुआ कुकर्मी का पोल खोल दिया है। इंसान के वेश में हैवान से सतर्क रहने की शिक्षा देते हैं। राय साहब की बेटी मीनाक्षी अपने पति दिग्विजय सिंह को उसकी ओछी हरकतें अय्याशीपन जैसे दारु -शराब, वेश्या नाचना, पराई स्त्रियों पर डोडा डालना आदि आदि उनके व्यभिचार से दुखी थी एक दिन जब अपने कोठे पर वेश्याओं का नाच- गान चल रहा था वही हंटर लेकर पहुंच गई। लोग इधर-उधर भागने लगे जब सब भाग गया तब पति दिग्विजय सिंह को हंटर से मार मार कर वेदम कर दी। दूसरी कोने में नाचने वाली बाई हाथ जोड़े दया के भीख मांगने लगी मीनाक्षी अंगार भरे नजरों से देखी हुई बोली "हम स्त्रियां भोग विलास की चीज है ही तेरा कोई दोस्त नहीं है।"[14]

निष्कर्ष के रूप में यही कहा जाएगा कि प्राचीन काल से ही नारियों के प्रति जो समाज के लोगों के मन में यही सोच घर कर गया था की नारियां कमजोर है, कोमलांगी है, कितना ही जुल्म करो सब सह लगी। पुरुषों के हाथ का खिलौने बनाकर उसे रखा जाता था। हर बात के लिए उसे पुरुषों पर निर्भर रहना पड़ता था। प्रेमचंद ने अपनी गोदान में के माध्यम से समाज की नजरिया को ही बदल दिया। जहां प्राचीन नारी अपमान की घूंट भगवान शंकर की तरह पी जाती थी। गोदान का हर एक नारी पात्र आत्म सम्मान की रक्षा के लिए पुरुष शक्ति से टकराती है, संघर्ष करती है, जूझती है और अंत में अपनी ओजस्विता से पुरुषों को निरुत्तर कर देती है। शक्ति से

पीट भी देती है। धनिया, झुनिया, पूनिया और मीनाक्षी आदि नारियों के माध्यम से प्रेमचंद ने सिद्ध कर दिया कि स्त्रियां कमजोर नहीं है। समाज के सारे कोड़ा भ्रम को तोड़ दिया है। प्रेमचंद के इस साहसपूर्ण काम का मैं सराहना करता हूं।

संदर्भ सूची:

1. 'गोदान' लेखक - मुंशी प्रेमचन्द, न्य साधना पाकेस बुक्स प्रकाशन, रोशन आरा रोड दिल्ली -110007.
2. वही, पृष्ठ संख्या -5
3. वही, पृष्ठ संख्या -100
4. वही, पृष्ठ संख्या - 100
5. वही, पृष्ठ संख्या -100
6. वही,पृष्ठ संख्या -100
7. वही, पृष्ठ संख्या -100
8. वही, पृष्ठ संख्या -100
9. वही, पृष्ठ संख्या -102
10. वही, पृष्ठ संख्या -102
11. वही, पृष्ठ संख्या -102
12. वही, पृष्ठ संख्या -44
13. वही, पृष्ठ संख्या -44
14. वही, पृष्ठ संख्या -288